IDVS01

VOWELS

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ऍ ऎ ए ऐ ऑ ऒ ओ औ

CONSONANTS

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल ळ व श श ष स ह

MARKS

◌ा ◌ि ◌ी ◌ु ◌ू ◌ु ◌ू ◌ृ ◌ॄ ◌ॢ ◌ॣ ◌ॅ ◌ॆ ◌े ◌ै ◌ॉ ◌ो ◌ौ ◌् ◌् ◌ँ ◌ँ ◌ं ◌ः ◌ँ ◌ें ◌ें ◌ैं ◌ैं ◌॑ ◌॒ ◌॓ ◌॔ ◌ु ◌ू

◌ि ◌ि ◌ि ◌ि ◌ि ◌ि ◌ी ◌ी ◌ी ◌िँ ◌िँ ◌िँ ◌िँ ◌िँ ◌िँ ◌िं ◌िं ◌िं ◌िं ◌िं ◌िं ◌ीं ◌ीं ◌ीं ◌ों ◌ौं ◌ों ◌ौं

CONJUNCTS

क्क क्घ क्ङ क्च क्छ क्ज क्झ क्भ क्ञ क्ड क्थ क्ध क्न क्भ क्य क्श क्ह क्ज्ञ क्क्य क्त्य क्व्य क्ष्म

क्ष्य क्ष्म्य क्स्ट क्स्ड क्स्प्ल क्स्प्ल ख्न ग्न्य ग्न ग्भ ग्ध्य ग्ध्व ग्न्य ग्भ्य घ्ङ घ्च घ्छ घ्ड घ्थ घ्ध घ्न घ्भ

घ्श घ्ह घ्ज्ञ ङ्क ङ्ख ङ्ग ङ्घ ङ्म ङ्य ङ्क्र ङ्क्ष च्छ च्झ च्भ च्ड च्थ च्ध च्न च्भ च्श च्ह च्ज्ञ च्छ्व छ्व छ्य छ्र्य

ज्क ज्ख ज्ग ज्ज ज्ट ज्ठ ज्ड ज्ढ ज्त ज्थ ज्द ज्न ज्भ ज्म ज्य ज्स ज्ज्ञ ज्ज्य ज्ज्व झ्य झ्ङ झ्छ झ्ड

झ्न झ्भ झ्श झ्ह ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्ङ ञ्ड ञ्भ ञ्श ञ्ह ञ्ज्ञ ञ्ञ ञ्य ट्ट ट्ठ ट्ढ ट्य ट्व ट्ट्य ठ्ठ ठ्य ठ्व ठ्ठ्य ड्ग ड्ट

ड्ड ड्ढ ड्य ड्व ड्ड्य ढ्र्य ढ्ढ ढ्य ढ्व ढ्ढ्य त्ख त्च त्ज त्ञ त्ट त्ठ त्त त्थ त्द त्ध त्न त्भ त्य त्ल त्ल त्स त्य त्क्ष

त्क्न त्क्र त्त्य त्न्य त्र्य त्स्न त्क्य त्स्य त्स्व त्स्न्य थ्घ थ्ङ थ्च थ्छ थ्ड थ्थ थ्ध थ्न थ्भ थ्श थ्ह द्ग्र द्ब्र द्र्य द्र

द्ग द्घ द्द द्ध द्न द्ब द्भ द्म द्य द्व द्द्य द्ध्य द्भ्य द्व्य ध्ङ ध्च ध्छ ध्ड ध्थ ध्ध ध्न ध्भ ध्श ध्ह ध्य न्ग न्छ न्ञ न्ड

न्थ न्ध न्न न्भ न्म न्य न्श न्न्य न्ज्य न्त्य न्त्स न्थ्य न्थ्व न्ध्य न्ध्र न्ध्व न्भ्य न्भ्व न्स्म्य प्ङ प्छ प्ड प्थ प्ध

प्न प्भ प्श ट्ट ट्ठ ट्ट्य ठ्ठ्य ठ्ठ्य प्त्य फ्ग फ्घ फ्ङ फ्च फ्छ फ्झ फ्भ फ्ञ फ्ड फ्थ फ्ध फ्न फ्भ फ्श

फ्ह फ्ज्ञ ब्भ ब्ध ब्न ब्भ ब्श ब्ज्य ब्ध्व ब्ल्य भ्ङ भ्छ भ्ञ भ्ड भ्थ भ्ध भ्न भ्भ भ्श भ्ह म्ङ म्छ म्ञ म्ड

म्थ म्ध म्न म्भ म्श म्ह म्ब्य म्भ्य म्भ्व य्घ य्ङ य्छ य्ड य्थ य्ध य्न य्भ ल्ख ल्ग ल्घ ल्च ल्ञ ल्थ ल्ध

ल्न ल्भ ल्म ल्य ल्श ल्स ल्क्य ल्थ्य ल्ल्य ल्व्ड व्न व्ह श्च श्न श्व ष्ट ष्ठ ष्म ष्य ष्ट्य ष्ट्व ष्ठ्य ष्म्य स्थ स्न

स्म स्त्य स्त्र स्थ्य स्म्य ह्ण ह्न ह्म ह्य ह्ल ह्व ह्म्य ह्म्य दु दू दृ द्द रु रू हृ हु हू

NUMBERS AND SIGNS १ १ २ ३ ४ ५ ५ ६ ७ ८ ८ ९ ६ । ॥ ॽ ऽ ₹ ॰ ॐ

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
ज	झ	झ	ञ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र
ल	ळ	व	श	श	ष	स
ह	क्ष	त्र	ज्ञ	१	२	३

RAKAR FORMS

क्र ऋ ख्र ग्र घ्र च्र ज्र झ्र त्र त्र थ्र द्र ध्र न्र प्र फ्र ब्र भ्र म्र य्र ल्र व्र श्र ष्र स्र ह्र क़्र ख़्र ग़्र ज़्र फ़्र य़्र क्ष्र

NUKTA FORMS

क़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़ फ़ य़ क़्त क़्फ क़्ब क़्म ख़्त ख़्म ख़्य ख़्व ख़्श ख़्स ज़्य फ़्त फ़्स ज़्ज़ फ़्ज़ फ़्फ़

HALF FORMS

क्‍ ख्‍ ग्‍ घ्‍ च्‍ ज्‍ झ्‍ ञ्‍ ण्‍ त्‍ थ्‍ ध्‍ न्‍ प्‍ फ्‍ ब्‍ भ्‍ म्‍ य्‍ र्‍ ल्‍ ळ्‍ व्‍ श्‍ श्‍ ष्‍ स्‍ क्ष्‍ त्र्‍ ज्ञ्‍ क़्‍ ख़्‍ ग़्‍ ज़्‍ ऩ्‍ फ़्‍ य़्‍ ऴ्‍

VOWELS

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ऍ ऎ ए ऐ ऑ ऒ ओ औ

CONSONANTS

क ख ग घ ङ च छ ज झ झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल ळ व श श ष स ह

MARKS

◌ा ि◌ ◌ी ◌ु ◌ू ◌ु ◌ू ◌ृ ◌ॄ ◌ॢ ◌ॣ ◌ॅ ◌े ◌ॆ ◌ै ◌ॉ ◌ो ◌ौ ◌् ◌्र र्◌ र्◌ं ◌ं ◌ः ◌ँ ◌॑ ◌॑ ◌॒ ◌॔ ◌॓ ◌ु ◌ू

ि◌ ि◌ ि◌ ि◌ ि◌ ि◌ ◌ी ◌ी ◌ी िर्◌ िर्◌ िर्◌ िर्◌ िर्◌ िर्◌ िं◌ िं◌ िं◌ िं◌ िं◌ िं◌ ◌ीं ◌ीं ◌ीं ◌ीं ◌ीं ◌ीं ◌ीं

CONJUNCTS

क्क क्घ क्ङ क्च क्छ क्ज क्झ क्झ क्ञ क्ड क्थ क्ध क्र क्भ क्य क्श क्ह क्ज्ञ क्क्य क्त्य क्व्य

क्ष्म क्ष्य क्ष्म्य क्स्ट क्स्ड क्स्प्ल क्स्प्ल ख्न ग्र्य ग्न ग्भ ग्ध्य ग्ध्व ग्न्य ग्भ्य घ्ङ घ्च घ्छ घ्ड घ्थ घ्ध ध्र

घ्भ घ्श घ्ह घ्ज्ञ ङ्क ङ्ख ङ्ग ङ्घ ङ्म ङ्य ङ्क्र ङ्क्ष च्छ च्झ च्झ च्ड च्थ च्ध च्र च्भ च्श च्ह च्ज्ञ च्छ्व छ्व छ्य

छ्र्य ज्क ज्ख ज्ग ज्ज ज्ट ज्ठ ज्ड ज्ढ ज्त ज्थ ज्द ज्र ज्भ ज्म ज्य ज्स ज्ज्ञ ज्ज्य ज्ज्व झ्य झ्ङ झ्छ

झ्ड झ्न झ्भ झ्श झ्ह ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्ङ ञ्ड ञ्भ ञ्श ञ्ह ञ्ज्ञ ञ्ज्ञ ञ्ज्य ट्ट ट्ठ ट्ढ ट्य ट्व ट्ट्य ठ्ठ ठ्य ठ्व ठ्ठ्य ड्ग

ड्ट ड्ड ड्ढ ड्य ड्व ड्ड्य ढ्र्य ढ्ढ ढ्य ढ्व ढ्ढ्य त्ख त्च त्ज त्ञ त्ट त्ठ त्त त्थ त्द त्ध त्न त्भ त्य त्ल त्ल त्स त्ल्य

त्क्ष त्क्र त्व्र त्त्य त्ल्य त्र्य त्स्न त्क्य त्स्य त्स्व त्स्न्य थ्घ थ्ङ थ्च थ्छ थ्ड थ्थ थ्ध थ्न थ्भ थ्श थ्ह द्ग्र द्घ्र द्र्य

द्ग्र द्ग्र द्घ द्द द्ध द्न द्ब द्भ द्म द्य द्व द्द्य द्ध्य द्न्य द्व्य ध्ङ ध्च ध्छ ध्ड ध्थ ध्ध ध्न ध्भ ध्श ध्ह ध्र्य न्ग न्छ न्ञ

न्ड न्थ न्ध न्न न्भ न्म न्य न्श न्न्य न्ज्य न्त्य न्त्स न्थ्य न्थ्व न्ध्य न्ध्र न्ध्व न्भ्य न्भ्व न्स्म्य प्ङ प्छ प्ड

प्थ प्ध प्र प्भ प्श प्ट प्ठ प्ट्य प्ठ्य प्ठ्य प्त्य फ्ग फ्घ फ्ङ फ्च फ्छ फ्झ फ्झ फ्ञ फ्ड फ्थ फ्ध फ्र

फ्भ फ्श फ्ह फ्ज्ञ ब्झ ब्ध ब्न ब्भ ब्श ब्ज्य ब्ध्व ब्ल्य भ्ङ भ्छ भ्ञ भ्ड भ्थ भ्ध भ्न भ्भ भ्श भ्ह म्ङ

म्छ म्ञ म्ड म्थ म्ध म्न म्भ म्श म्ह म्ब्य म्भ्य म्भ्व य्घ य्ङ य्छ य्ड य्थ य्ध य्न य्भ ल्ख ल्ग ल्घ ल्च

ल्ञ ल्थ ल्ध ल्न ल्भ ल्म ल्य ल्श ल्स ल्क्य ल्थ्य ल्ल्य ल्ड व्न व्ह श्च श्न श्व ष्ट ष्ठ ष्म ष्य ष्ट्य ष्म्य ष्ट्व

ष्ठ्य स्थ स्न स्म स्त्य स्त्र स्थ्य स्म्य ह्ण ह्न ह्म ह्य ह्ल ह्व ह्ल्य ह्म्य दु दू दृ द्द रु रू हृ हु हू

NUMBERS AND SIGNS १ १ २ ३ ४ ५ ५ ६ ७ ८ ८ ९ ९ । ॥ ॽ ऽ ₹ ० ॐ

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ
ज	झ	झ	ञ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र
ल	ळ	व	श	श	ष	स
ह	क्ष	त्र	ज्ञ	१	२	३

RAKAR FORMS

क्र क्र ख्र ग्र घ्र च्र ज्र झ्र त्र त्र थ्र द्र ध्र न्र प्र फ्र ब्र भ्र म्र य्र ल्र व्र श्र ष्र स्र ह्र क़्र ख़्र ग़्र ज़्र फ़्र य़्र क्ष्र

NUKTA FORMS

क़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़ फ़ य़ क़्त क़्फ क़्ब क़्म ख़्त ख़्म ख़्य ख़्व ख़्श ख़्स ज़्य फ़्त फ़्स ज़्ज़ फ़्ज़ फ़्फ़

HALF FORMS

क् ख् ग् घ् च् ज् झ् ञ् ण् त् थ् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् ळ् ठ् श् श् ष् स् क्ष् त्र् ज्ञ् क़् ख़् ग़् ज़् ऩ् फ़् य़् ऴ्

LATIN PRO	DEVANAGARI 1	SANS	DEVANAGARI 2
Extrabold		**Learner mode**	**टीचर वीक**
Bold	**पढना लिखना**	**Learner mode**	**टीचर वीक**
Semibold	**पढना लिखना**	**Learner mode**	**टीचर वीक**
Regular	पढना लिखना	Learner mode	टीचर वीक
Light	पढना लिखना	Learner mode	टीचर वीक
		Learner mode	टीचर वीक
		Learner mode	टीचर वीक

फरवरी का विकट भरम सपनों को बदलें सच में टाइप के संग

दिमागी गुहांधकार का नया ओरांगुटान खोपडी के रहस्य का शानदार खुलासा

पुनर्गठन और सुधार का काम आने वाली पीढ़ियों को सौंपा गया

गलती का दोष किसी पर नहीं डाला जाए

चारली डारविन राजनीतिक सुधारक

ग़ालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे मे निस्संदेह कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन ग़ालिब के अनुसार उन्होंने ११ वर्ष की अवस्था से ही उर्दू एवं फ़ारसी में लिखना उर्दू में पारम्परिक भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखीं जो गज़लों के रूप में लिखी गई हैं। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह रूप गज़ल के नाम से जाना जाता है। १३वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था और विवाह के बाद वह दिल्ली आ गये थे जहाँ उनकी तमाम उम्र बीती।

अपनी पेंशन के सिलसिले में उन्हें कोलकाता की लम्बी यात्रा भी करनी पड़ी थी-जिसका ज़िक्र उनकी गज़लों में जगह-जगह पर मिलता है। ग़ालिब का विवाह लोहारु के नवाब के यहाँ हुआ था। उर्दू भाषा को-कई लोग हिन्दी का ही एक रूप मानते हैं उनके अनुसार यह हिन्दी का वो रूप है जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द अधिक हैं और फ़ारसी-अरबी लिपी में लिखी जाती है। इसमें संस्कृत के तत्सम-शब्द कम हैं। ये मुख्यतः दक्षिण एशिया के मुसलमानों द्वारा बोली जाती है-जो इसे अपनी सभ्यता का आवश्यक अंग समझते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी और उर्दू में बहुत अधिक अंतर नहीं है और मातृभाषियों उर्दू सीखना अत्यंत सरल माना जाता है क्योंकि यह काफी मिलती जुलती हैं। ग़ालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे मे निस्संदेह कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन ग़ालिब के अनुसार उन्होंने ११ वर्ष की अवस्था से ही उर्दू एवं फ़ारसी में लिखना उर्दू में पारम्परिक भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखीं जो गज़लों के रूप में लिखी गई हैं। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह रूप गज़ल के नाम से जाना जाता है। १३वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था और विवाह के बाद वह दिल्ली आ गये थे जहाँ उनकी तमाम उम्र बीती। अपनी पेंशन के सिलसिले में उन्हें कोलकाता की लम्बी यात्रा भी करनी पड़ी थी-जिसका ज़िक्र उनकी गज़लों में जगह-जगह पर मिलता है। ग़ालिब का विवाह लोहारु के नवाब के यहाँ हुआ था। उर्दू भाषा को-कई लोग हिन्दी का ही एक रूप मानते हैं उनके अनुसार यह हिन्दी का वो रूप है जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द अधिक हैं और फ़ारसी-अरबी लिपी में लिखी जाती है। इसमें संस्कृत के तत्सम-शब्द कम हैं। ये मुख्यतः दक्षिण एशिया के मुसलमानों द्वारा बोली जाती है-जो इसे अपनी सभ्यता का आवश्यक अंग समझते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी और उर्दू में बहुत अधिक अंतर नहीं है और मातृभाषियों उर्दू सीखना अत्यंत सरल माना जाता है क्योंकि यह

बद से बदतर होती मानव जाति का यह पडाव

यह आकाशवाणी है और समय हो रहा है दोपहर के तीन बजकर पच्चीस मिनट अब आप हरिशंकर परसाई से समाचार सुनिये

हालावादी घटनाऐं
शहर में जनता ने अपने वानर बन्धुओं की मानसिक स्थिति से किया समझौता

कामयाबी अब करीब आती नज़र आ रही है जिससे सभी दिमागी गतिविधियाँ केन्द्रीय प्रशासन संचालित करेगा

गुमराह पीढ़ी का भय मिटा जब ना रहेगी खुद सोच पाने की क्षमता तो डर किसका

DEVANAGARI • 2012

ग़ालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे मे निस्संदेह कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन ग़ालिब के अनुसार उन्होंने ११ वर्ष की अवस्था से ही उर्दू एवं फ़ारसी में लिखना उर्दू में पारम्परिक भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखीं जो गज़लों के रूप में लिखी गई हैं। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह रूप गज़ल के नाम से जाना जाता है। १३वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था और विवाह के बाद वह दिल्ली आ गये थे जहाँ उनकी तमाम उम्र बीती। अपनी पेंशन के सिलसिले में उन्हें कोलकाता की लम्बी यात्रा भी करनी पड़ी थी-जिसका ज़िक्र उनकी गज़लों में जगह-जगह पर मिलता है। ग़ालिब का विवाह लोहारु के नवाब के यहाँ हुआ था। उर्दू भाषा को-कई लोग हिन्दी का ही एक रूप मानते हैं उनके अनुसार यह हिन्दी का वो रूप है जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द अधिक हैं और फ़ारसी-अरबी लिपी में लिखी जाती है। इसमें संस्कृत के तत्सम-शब्द कम हैं। ये मुख्यतः दक्षिण एशिया के मुसलमानों द्वारा बोली जाती है-जो इसे अपनी सभ्यता का आवश्यक अंग समझते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी और उर्दू में बहुत अधिक अंतर नहीं है और मातृभाषियों उर्दू सीखना अत्यंत सरल माना जाता है क्योंकि यह काफी मिलती जुलती हैं। ग़ालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे मे निस्संदेह कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन ग़ालिब के अनुसार उन्होंने ११ वर्ष की अवस्था से ही उर्दू एवं फ़ारसी में लिखना उर्दू में पारम्परिक भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखीं जो गज़लों के रूप में लिखी गई हैं। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह रूप गज़ल के नाम से जाना जाता है। १३वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था और विवाह के बाद वह दिल्ली आ गये थे जहाँ उनकी तमाम उम्र बीती। अपनी पेंशन के सिलसिले में उन्हें कोलकाता की लम्बी यात्रा भी करनी पड़ी थी-जिसका ज़िक्र उनकी गज़लों में जगह-जगह पर मिलता है। ग़ालिब का विवाह लोहारु के नवाब के यहाँ हुआ था। उर्दू भाषा को-कई लोग हिन्दी का ही एक रूप मानते हैं उनके अनुसार यह हिन्दी का वो रूप है जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द अधिक हैं और फ़ारसी-अरबी लिपी में लिखी जाती है। इसमें

SPECIMEN SPECIAL EDITION

टीवी किट

ग़ालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में

निस्संदेह कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन ग़ालिब के अनुसार उन्होंने ११ वर्ष की अवस्था से ही उर्दू एवं फ़ारसी में लिखना आरम्भ कर दिया था। -उन्होंने अधिकतर फ़ारसी और उर्दू में पारम्परिक भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखीं जो गज़लों के रूप में लिखी गई हैं। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह रूप गज़ल के नाम से जाना जाता है।

आकाशवाणी

Tuesday	**13.00**	Hindi mein samachaar
Wednesday	**14.30**	Aap ki farmaaish
Thursday	**11.30**	Fauji bhaiyon ki pasand
Friday	**15.30**	Bela ke phool
Saturday	**20.30**	Binaka geet mala

विवाह के बाद वे वापस घर आ गये थे व अपनी पेंशन के सिलसिले में कोलकाता तक लंबी यात्रा भी करनी पड़ी थी जिसका ज़िक्र गज़लों में जगह ● जगह पर मिलता है। ●

उनके अनुसार यह हिन्दी का वो रूप है जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द बहुत अधिक हैं और फ़ारसी-अरबी लिपी में लिखी जाती है। इसमें संस्कृत के तत्सम-शब्द कम हैं। ये मुख्यतः दक्षिण हिन्दी मातृभाषियों के लिए उर्दू सीखना अत्यंत सरल माना जाता है क्योंकि उन्हें उर्दू से सामान्य रूप से प्रयोग होने वाले अधिकतर शब्द पहले से ही ज्ञात होते हैं और केवल लिपी ही सीखनी होती है उर्दू शब्द मूलतः तुर्की भाषा का है तथा इसका अर्थ है-

घरेलू मनोरंजन : विचित्र जानकारी अब आप के हाथ

भारतीय सूचना एवं प्रसारण विभाग • २९ **फरवरी** २०१२

● वैसे तो बड़े पर्दे पर भारतीय मनोरंजन ने कोई उम्मीद नहीं छोड़ी है लेकिन फिर भी यह हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम जनता को आगाह कर दें कि टेलिविज़न एक अलग माध्यम है जिसकी हानिकारक प्रवृत्तियाँ दिमागी चोट पहुँचाने में न केवल पूर्णतया सक्षम हैं बल्कि यह कहना अनुचित

बटर चिकन रन

भारतीय पकवान अब थ्रीडी में उपलब्ध

गहराती सामाजिक अर्थहीनता से आलोचकों ने मानी हार

नरम फटकार का

नई फिल्म निरीक्षण कमेटी बनाने पर ज़ोरदार दबाव • **पावर पफ चीफ रवाना** • व्यापक कोहराम

विश्व की सभी मुख्य चलचित्र संबंधी संस्थाएं आजकल इस वादविवाद में जूझ रहीं हैं कि स्वाभाविक रूप से थ्रीडी प्रतीत होने वाली दुनिया को और अधिक थ्रीडी की आवश्यकता है या नहीं। कई विशेषज्ञों का मानना है कि थ्रीडी का जुनून एक प्रकार का **मनोवैज्ञानिक रोग** है जिसे भ्रांतिमूलक अन्धापन कहा जा सकता है। ज़ाहिर सी चीज़ को देख पाने की क्षमता खो देना इसका प्रमुख लक्षण है तथा पहले चरण में ही यह अवस्था मरीज़ का दिमागी विकास रोक देने में सक्षम है जैसा